International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.882, Volume 05, No. 02(II), April - June, 2023, pp. 19-25

शिक्षा के सैद्धान्तिक और व्यवहारिक आयाम

डॉ. मणिमाला शर्मा*

प्रस्तावना

भारत के गुरु का स्थान एक मित्र, दार्शनिक, मार्गदर्शक और संरक्षक रुप में रहा है।

यहां डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने कहा है कि विद्यार्थी वह नहीं सीखते जो शिक्षक कहते है बल्कि विद्यार्थी वह सीखते है जो शिक्षक करते है। इस कथन द्वारा डॉ. राधाकृष्णन ने गुरुजनों के आचरण, उनको स्वयं को आदर्श रूप में उपस्थित रहने की महत्ता पर बल दिया है ।

यदि आज विद्यार्थियों में अनुशासनहीनता, उद्दण्डता अथवा अध्ययन के प्रति उदासीनता दृष्टिगोचर होती है तो इसका सम्पूर्ण उत्तरदायित्व समाज पर या मौजूद हालात पर डालना उचित नहीं है। कुछ जिम्मेदारी शिक्षकों की भी बनती है।

शिक्षक अपने विषय में पूर्ण ज्ञाता हो, शिक्षण कार्य रूचि एवं निष्ठा से करें, शिक्षण के प्रति ईमानदार हो, अपने चरित्र और व्यक्तित्व विद्यार्थियों के सामने आदर्श रूप में रख सकते हों ताकि विद्यार्थी उन गुणों को आत्मसात करें। जब समाज में विघटनकारी ताकते पनप रही है तब शिक्षक के लिए यह और भी आवश्यक हो गया है कि शिक्षक अपने व्यक्तित्व को और अधिक प्रभावशाली और उज्जवल तरीके से प्रस्तुत करें ताकि उनके आदर्शों का चुम्बकीय प्रभाव उन्हें अनुरूप बनने के लिए प्रेरित करें। शिक्षकों को समाज में अपना सम्मान और आदर बनाए रखने के लिए अपने व्यवसाय और व्यक्तित्व के प्रति सचेत एवं जागरूक रहना आवश्यक है। यहां यह कहना भी अनुचित न होगा कि ट्यूशन प्रवृत्ति, कामचोरी, अधिक बोलना, अध्यापन छोड़कर दूसरे कामों में व्यस्त रहना आदि बातें शिक्षकों की साख को गिराती है । जहाँ शिक्षकों को इस संबंध में ध्यान रखना होगा वहां प्रशासन को भी शिक्षकों को अध्यापन कार्य छोड़कर अन्य कार्यों में व्यस्त रखने पर पुनः सोचना होगा । अन्यथा सारी व्यवस्था प्रभावित हो जाती है और वांछित उद्देश्यों की प्राप्ति नहीं होगी।

जी हाँ इसलिए शिक्षक किसान भी है और जवान भी। किसान होकर वह एक नई पौध को पनपाता है, उसे फलने–फूलने और पल्लवित होने का अवसर देता है, नई से नई कलमें रोपता है, जहाँ जरूरत हो निराई–गुड़ाई करता है, खरपतवार को हटाता है, आँधी, तूफान से, कीटों से उसे बचाता है और जब वह पौधे पूरी तरह पनप जाते है तो मुस्कान के साथ उसे समाज को सौंपकर फिर से नई पौध लगाने में जुट जाता है। किसान ही नहीं शिक्षक जवान भी है। उसे संस्कृति, मूल्यों और देश की विरासत की रक्षा जो करनी है क्योंकि यह कार्य या तो जिम्मेदार और अच्छे माता–पिता कर सकते है या फिर अच्छे अध्यापक।

इस हेतु शिक्षकों में निम्न कतिपय गुणों का होना आवश्यक है :–

- नए और सृजनात्मक कार्यों के प्रति रूझान ।
- समाज में शिक्षा का प्रसार, वंचितों की शिक्षा के प्रति विशेष ध्यान ।
- बाहरी दुनिया का व्यापक ज्ञान ।

* सहायक आचार्य दर्शनशास्त्र, राजकीय महाविद्यालय रोहट, पाली, राजस्थान।

- स्वतंत्र रूप से सोचने तथा कार्य करने की शक्ति ।
- सिद्धान्त और व्यवहार द्वारा नेतृत्व करने की योग्यता ।
- रचनात्मक और सतत कार्य करने की योग्यता ।
- मानवीय और वित्तीय संसाधन जुटा सकना तथा सभी वर्गो के साथ काम कर सकने की योग्यता।

अर्थात् जब गुरुजन खुले ह्रदय से जिम्मेदारी स्वीकार करे तथा उत्तरदायित्व वहन करे । तभी वे सामाजिक परिवर्तन में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकेंगें और राष्ट्रीय विकास में सहभागी बन सकेंगें।

नित्शे का मानना है कि ज्ञान को बच्चों के मस्तिष्क में ठूसना उन पर एक प्रकार का आक्रमण है। उनके स्वतंत्र चिन्तन पर हमला है। उन्हें कहा जाता है कि जो हम देखना चाहते है उसे ग्रहण करो और जो हम सुनना चाहते है बस उसी को सुनो। देखने–सुनने पर यह हमला कोई मामूली बात नहीं है। इसीलिए कुछ विचारकों का मानना है कि जो अनुभव सदियों से पहले पुष्ट हो चुका है उसे यदि बार–बार दोहराया जाएगा तब तो सभ्यता एक इंच भी आगे नहीं बढ़ सकती। किताबों, के माध्यम से जज मानव जाति के अब तक के महानतम और आश्चर्यजनक विचारों, अनुभवों और उपलब्धियों को जाना जा सकता है तो फिर–फिर से उनकी परिक्रमा करते रहने से क्या फायदा?

प्रश्न यह उत्पन्न होता है कि सूचनाओं के इस अम्बार में से कितना 'ज्ञान' वास्तव में जरूरी है? जब दिमाग को पुरानी और आवश्यक–अनावश्यक बातों से ठूंसठूंस कर भर दिया जाएगा तो उसमें नया सोचने की जगह ही कहां बच पाएगी?

बच्चे को अपने अनुभव के आधार पर विकास करने का वातावरण मिलना चाहिए। हम बच्चों को बताते है कि ए ने यह किया, बी ने यह खोजा, पर बच्चा अपने अनुभव अपने जीवन की पोथी, कुदरत के अनुभवों से क्या सीखता है? क्या खोजता है? यह भी कम महत्वपूर्ण नहीं है।

किताबों के माध्यम से जो सत्य जाना जाता है वह अधकचरा सत्य है। रम्फ इस बात को आगे बढ़ाते हुए कहते है "यह तो पागलपन की उस मिसाल की तरह है जहां किशोर कलाकारों को स्टूडियो में न ले जाकर आर्ट गैलेरियों या प्रदर्शनियों में ले जाया जाए। सीखना तो उन्हें स्टूडियो में है और वह भी कुदरत के मास्टर स्टूडियों में। यह कैसे हो सकता है कि बिना कुछ सीखे या बिना कुछ किए, कोई कलाकार को आर्ट गैलेरी में ले जाये जाने मात्र से कला की दृष्टि, मर्मज्ञता या कौशल हासिल कर लें?"

रम्फ ने अपने आलेख (म्कनबंजपवद अंक 44 – एन्साइट कैन नॉट बी ट्रांसमिटेड इन दी सेम वे इज इन्फर्मेशन) में 5 महत्वपूर्ण बातों पर जोर दिया हैं, जो इस प्रकार हैः–

- बने बनाए विचार या तैयारशुदा सूचनाऐं देना गलत नहीं है, दी जा सकती है, पर जरूरी यह है कि वे महत्वपूर्ण विचार हमारे लिए प्रासंगिक भी हो। वे केवल सूचना भर न रहें। उनका निरन्तर विकास होता रहें, बहस होती रहें, उलझी बातें स्पष्ट होती रहे और सच्चाई सामने आती रहे तो फिर कोई उलझन नहीं रहेगी।
- विद्यालय में ऐसे अवसर पैदा किए जाने चाहिए जो सच्चाई को देखने में मददगार हो सकें। इसके ठीक विपरीत होता यह है कि बच्चों को अपनी नयी खोज में कोई मदद नहीं हो जाती वरन् उन्हें अनुत्साहित किया जाता है।" चारो ओर बंधन ही बंधन है, ऐसे में कोई पागल ही इस बात का सुझाव दे सकता है कि जंजीरों से जकड़े व्यक्ति को पियानो बजाने के लिए कहा जाय।"
- ज्ञान के उद्गम और प्राप्ति के बीच बहुत बड़ी दूरी नहीं होनी चाहिए। अभी तो छात्रों को वहीं ग्रहण करना पड़ता है जो विशेषज्ञों ने बताया है या जो कहीं अन्यत्र खोजा गया है या महत्वपूर्ण माना गया है। छात्र अपने स्तर पर नहीं जान पाते कि क्या महत्वपूर्ण है और क्या महत्वहीन ?

- हमारे विद्यालय छात्रों को सत्य का साक्षी बनाने मे बड़े कमजोर सिद्ध हुए है। उनको इस बात का कोई अनुभव नहीं है कि जब तक कोई सत्य के आमने–सामने न हो जाए, वह व्यक्तिगत रूप से जिम्मेदारी कैसे लगा ?
- शिक्षा का विकास आँकड़े इकट्ठे करने भर से नहीं होता। यह इतना महत्वपूर्ण नहीं है कि कितने छात्र उत्तीर्ण हुए जितना महत्वपूर्ण यह पता लगाना है कि कितने ऐसे विद्यालय है जहाँ लोग महीने में पाँच दिन भी इकट्ठा होकर अनुभवों का आदान–प्रदान करता है। क्या किसी क्षेत्र में ऐसे चार–पाँच विद्यालय भी है ?

शिक्षा वह नहीं है जिसका सत्य से कोई लेना–देना नहीं हो और जो व्यावहारिकता से दूर हो अपितु शिक्षा वही है जो सत्य की खोज में सहायक हो और जो जिज्ञासा के मार्ग में बाधक न बनें।

शिक्षा प्रणाली में बुनियादी तब्दीली लाने के लिए कोई अवतारों की अपेक्षा न करें। यह काम तो स्वयं शिक्षक को ही करना होगा । उसी पर उम्मीदें टिकी हैं। वहीं दृष्टा है, वही अन्वेषक है, वहीं माध्यम है, वहीं मैसेज है। अगर उसके भीतर का कम्युनिकेटर जिन्दा है तो तालीम का वांछित असर पड़ेगा ही पड़ेगा ।

किसी कवि की चार पंक्तियाँ यहाँ मुझे याद आ रही है :–

कथनी को करनी से और

शब्द शक्ति को कर्म शक्ति से जोड़कर

त्याग और तपस्या की भावना से ही ऐसी मंजिले पाई जाती है।

जब विचार करना ही है तो सिर्फ भविष्य के लिए ही क्यूं? हमें भूत तथा वर्तमान पर भी विचार करना चाहिए । सशक्त बनना और बनाना ही है तो मात्र शिक्षक और शिक्षण को क्यूं ? मनुष्य मात्र को सशक्त बनने का रास्ता दिखाया जा है चलना, यह व्यक्ति विशेष की इच्छा और उसके जीवन जगत से सम्बन्धित दृष्टिकोण तथा उसकी क्षमता पर निर्भर होता है।

सबसे पहले समग्र दृष्टि को खण्डित कर नितान्त व्यावहारिक धरातल पर आकर यदि केवल मात्र शिक्षकों की बात करे तो उनके लिए क्या होना चाहिए ? को कुछ बिन्दुओं में स्पष्ट करने का प्रयत्न किया है।

तत्पश्चात् कुछ महान विचारको जैसे राधाकृष्णन और गांधी के विचारों में शिक्षा, ज्ञान और अन्तिम ध्येय को मैने स्पष्ट करने का प्रयास किया है।

- **मूल्यों के द्वारा**

मूल्यों के निम्न प्रकार है–

1. नैतिक मूल्य
2. चारित्रिक मूल्य
3. सामाजिक मूल्य
4. मानवीय मूल्य
5. राष्ट्रीय मूल्य
6. अर्न्तराष्ट्रीय मूल्य
7. सांसारिक मूल्य

- **सूचना प्रौद्योगिकी के द्वारा**
- **सम्प्रेषण के द्वारा**
- **शिक्षण की प्रभावशीलता द्वारा**
  - नैतिक मूल्य : शिक्षक जो कि बालक की प्रथम नैतिक पाठशाला होता है उसका स्वयं का नैतिक मूल्यों से सरोबार होना अत्यावश्यक है शिक्षक के अन्दर नैतिक मूल्य जैसे– ईमानदारी, सत्यवादिता, निष्पक्षता, दृढ़ निश्चय आदि जिस स्तर तक समाये होगे उन्हीं को छाप उनके शिष्यों में स्वतः ही प्उचतमे हो जायेगी। शिक्षक में उक्त नैतिक मूल्य होने पर उसका शिक्षण भी सशक्त होगा। कारण

कि एक नैतिक दृष्टि से समृद्ध शिक्षक ही अपना दायित्व सही व यथोचित रूप से निभा सकता है वहीं अपनी शिक्षण कार्य का न्यायपूर्ण ढंग से प्रतिपादन कर उचित परिणाम ला सकता है।

- चारित्रिक मूल्य – एक शिक्षक का चारित्रिक दृष्टि से पुष्ट होना अत्यावश्यक ही नहीं अपितु परमावश्यक है क्योंकि बच्चा तो कच्ची मिट्टी है तथा शिक्षक का चरित्र रूपी हाथ ही, बच्चों की चरित्र रूपी मिट्टी को उचित आकार प्रदान करेगा।

आज दिन प्रतिदिन समाचार पत्रों के माध्यम से पता चल रहा है कि शिक्षकों का द्रुतगति से नैतिक पतन हो रहा है जब बाड़ ही खेत को खाने लगे तो स्थिति बड़ी विकट होगी । शिक्षको को सर्वप्रथम स्वयं का चारित्रिक उत्थान करना होगा ताकि वो अपने अनुगामी छात्रों को चारित्रिक दृढ़ता प्रदान कर शिक्षण को व्यवस्थित करने में सहायक सिद्ध हो।

- सामाजिक मूल्य – समाज के मूल्यों के निर्धारण में शिक्षक की महत्वपूर्ण भूमिका होती है वही बालक को प्रथम सामाजिकता का पाठ पढ़ाता है बालक तभी सामाजिक होगा जबकि उसे शिक्षक द्वारा शिक्षण के समय सामाजिक मूल्यों जैसे सहभागिता सहयोग परोपकार, दया आदि की उपयोगिता समझायी जायेगी।
- मानवीय मूल्य – कोई विद्यार्थी गरीब है अगर शिक्षक उसकी मदद करता है तो उसके छात्र भी गरीबों की मदद का पाइ स्वयं सीख जायेंगे क्योंकि च्तंबजतपबंस सबब अपनी अलग ही उपयोगिता रखता है शिक्षक को अपने छात्रों के साथ मित्रवत व्यवहार कर शिक्षण करवाना चाहिए ताकि छात्र बिना किसी झिझक के अपनी कठिनाई या समस्यायें शिक्षक के समझ रखकर उनका समाधान प्राप्त कर सके।
- राष्ट्रीय मूल्य – अगर एक शिक्षक राष्ट्रीय मूल्यों का प्रतीकों का चिन्हों का सम्मान करेगा तभी उसके शिष्य भी ऐसा करने की सीख ले सकेगे अन्यथा उनमें भी राष्ट्रीयता की भावना का संचार संभव न हो सकेगा।
- अर्न्तराष्ट्रीय मूल्य – शिक्षक को चाहिए कि वो अपने शिष्य को अपने देश के प्रति ही आदर की भावना नहीं सीखाये अपितु दूसरे देशों के प्रति भी सम्मान की, सौहार्द की, प्रेम की, भाईचारे की भावना रखना सीखाये।
- सांसारिक मूल्य – शिक्षक को अपने छात्रों को विश्व बन्धुत्व का पाठ पढाना चाहिये ताकि सभी देशों के एक सूत्र में बंधे रहने की शुरूआत हो सके। सभी देश अपनी शिक्षण पद्धतियों का आदान प्रदान करे ताकि भविष्य में एक उन्नत व समृद्ध विश्व परिलक्षित हो

- **सूचना प्रौद्योगिकी के द्वारा**

शिक्षक सूचना प्रौद्योगिकी की नवीन तकनीकों जैसे टी.वी. रेडियो, बायोस्कोप द्वारा अपने शिक्षण को प्रभावी बना सकता है जो बात शिक्षक केवल बोलकर छात्रो को बताता है वही जब टी.वी पर भी छात्र को दिखाई जा सके तो दर्शनेन्द्रिय व श्रवणेन्द्रिय दोनो का उपयोग होने से शिक्षण की प्रभावशीलता बढ़ जायेगी।

उदाहरण– जब बालक पढ़ता है कि कोशिका ऐसी होती है उनमें कोशिकांग होते है आदि आदि और वही बालक जब कोशिका को टी.वी पर फिल्म के रूप में देखता है तो उसका ज्ञान स्थायी बन जाता है।

इस दिशा में दूरदर्शन द्वारा जन ज्ञान तथा यू.जी.सी. के कार्यक्रम अति सराहनीय कदम है।

- **सम्प्रेषण के द्वारा**

शिक्षक की सम्प्रेषण क्षमता इतनी पैनी होनी आवश्यक है कि वो बालक के अज्ञान की पर्त को भेदकर स्थायी ज्ञान देने की क्षमता रखे । शिक्षक को बालक के स्तर तक जाकर अपना ज्ञान उसमें सम्प्रेषित करना होगा। यह तभी संभव है जब शिक्षक सामग्री को अभिग्रहित कर सके अगर शिक्षक के पास ज्ञान तो बहुत है पर वो उसका सम्प्रेषण नहीं कर पा रहा है तो वह उस वृक्ष के समान है जिसके फल फलित नहीं होते।

शिक्षण की प्रभावशीलता द्वारा

शिक्षक को शिक्षक कराते समय नवीन जानकारियों, कहानियों विषय से सम्बन्धित सहायक शिक्षण सामग्रीयों जैसे चार्ट, पोस्टर, मॉडल आदि को अपनाकर अपना शिक्षण प्रभावी बनाना चाहिए।

शिक्षण को प्रभावी बनाने हेतु अत्यावश्यक है कि शिक्षक शिक्षण की नवीन विद्याओं की पूर्व जानकारी रखें तभी वों अपने छात्रों को उन विद्याओं द्वारा प्रभावी ढंग से शिक्षण करा सकेंगे ।

एक शिक्षक को स्वयं सदैव एक विद्यार्थी बने रहकर नवीन ज्ञान अर्जित करते रहना चाहिए ताकि वो उससे अपने शिक्षण कौशल को और अधिक पुष्ट बना सके । शैक्षिक नवाचारों को अपनाकर शिक्षक अपना शिक्षण प्रभावी बना सकता है। एक शिक्षक की भूमिका राष्ट्रीय निर्माण में इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि यही वो शिल्पकार है जो देश रूपी भवन की नीव को (छात्रों को मजबूत बनाता है ताकि उस पर सुदृढ़ राष्ट्र रूपी भवन बनाया जा सके।

अब हम यदि महात्मा गांधी के शिक्षा के प्रति विचारों की ओर रूख करेंगे तो यह पायेंगे कि वे शिक्षा को 'हरिजन' में परिभाषित करते हुए कहते है कि–

"By education I mean an all-round drawing out of the best in child and man body] mind and spirit".

गांधी जी कहते है कि उनके अनुसार शिक्षा का अर्थ है व्यक्ति के शरीर, मन आत्म में जो शुभत्व है उसे प्रकट करने का प्रयत्न उसे विकसित करने का प्रयत्न । इस मूल परिभाषा के आधार पर शिक्षा पर शिक्षा के ढंगों का विवरण देते हुए गांधी शिक्षा के हर पक्ष को स्पष्ट करते है।

ऊपर की परिभाषा से स्पष्ट है कि शरीर, मन तथा आत्म का सर्वांगीण विकास ही शिक्षा का वास्तविक लक्ष्य है।

गांधी शिक्षा को एक सर्वांगीण विकास मानते हैं जिसमें एक प्रकार से शरीर के सभी अंगों की कार्यक्षमता का विकास होता है, इसी प्रकार के विकास से बच्चे की भी वैचारिक तथा बौद्धिक शक्ति विकसित होती है। किन्तु शिक्षा मात्र इतना ही नहीं– शिक्षा का अर्थ है शरीर तथा मन के विकास के साथ 'आत्म' का विकास भी हो। इसी कारण शिक्षा का एक अनिवार्य पक्ष आध्यात्मिक शिक्षा है। अतः गांधी का कहना है कि हम इस सर्वांगीण विकास की सामान्यतः उपेक्षा करते हैं, तथा इसी कारण सामान्य शिक्षा के ढंग अपूर्ण तथा अधूरे प्रतीत होते है।

यही कारण है कि गांधी भारत में प्रचलित शिक्षा के ढंगों से सन्तुष्ट नहीं रहे। उनका कहना है कि जिस प्रकार की शिक्षा भारत में प्रचलित है उससे तो कुछ सूचनायें प्राप्त होती है, कुछ जानकारी मिलती है, तथा पढ़ने लिखने का ढंग सीखा जाता है। किन्तु गांधी का कहना है कि पढ़ना लिखना आ जाना शिक्षित होना नहीं है। उनके अनुसार तो हर व्यक्ति द्य कुछ मूल प्रकृतियों तथा शक्तियों के साथ पैदा होता है, तथा शिक्षा का लक्ष्य हर व्यक्ति में इन शक्तियों का उभारना है– उसे विकसित करना है।

गांधी का कहना है कि ऐसी शिक्षा सम्भव तभी हो सकती है जब सैद्धान्तिक जानकारी के साथ–साथ व्यवहारिक क्षमता बढ़ाने की भी सीख दी जाय। गांधी भी कर के सीखो के महत्व पर बल देते है। अतः उनकी अनुशंसा है कि शिक्षा का एक अनिवार्य अंग है– कुछ कार्यकुशलता सीखना हर व्यक्ति की शिक्षा में उसे कुछ हस्त शिल्प जैसी क्षमता प्राप्त करनी चाहिये– वह लकड़ी का कार्य सीखें, बुनाई का कार्य सीखें, मिट्टी के बर्तन बनाना सीखें, या ऐसा ही कुछ और यदि शिक्षा के क्रम में व्यक्ति शारीरिक श्रम करने के महत्व को समझ ले, तथा उस श्रम को उपयोगी दिशा में प्रवाहित कर सके, तो व्यक्ति का अन्तर हर प्रकार से विकसित हो पायेगा।

इसी कारण गांधी बुनियादी शिक्षा की बात करते हैं। इस प्रकार की शिक्षा में बच्चे को यह सीख दी जाती है कि वह स्वयं करके कार्य कुशलता प्राप्त कर सके। वह यदि स्वयं कर कर के सीखता है, तो वह स्पष्टतः समझ लेता है कि क्यों काई कार्य एक प्रकार से तो सम्पन्न होता है, किन्तु अन्य प्रकार से सम्पन्न नहीं होता। इस प्रकार से सीखने का एक स्पष्ट लाभ है – जो लाभ भारत में प्रचलित शिक्षा पद्धति में नहीं है। अभी

बच्चे जो स्कूल या कॉलेज में सीखते हैं, उसके सम्बन्ध में सदा एक प्रश्न चिन्ह बना रहता है कि उसकी वास्तविक जीवन में क्या उपयोगिता है। किन्तु बुनियादी शिक्षा में सीखने के क्रम में ही व्यक्ति उस सीख की व्यवहारिक उपयोगिता को भी समझ लेता है।

शायद इसी कारण गांधी आज की उच्च शिक्षा से तो स्पष्टतः असन्तुष्ट थें। अपनी विश्वविद्यालय की शिक्षा समाप्त कर जब व्यक्ति जीवन में प्रवेश करता है, तो वह स्पष्ट देखता है कि जो ज्ञान उसने विश्वविद्यालय में अर्जित किया उसकी कोई उपादेयता नहीं देता । अतः गांधी कहते हैं कि इस प्रकार की शिक्षा तो बन्द कर देनी चाहिये । शिक्षा का लक्ष्य । व्यक्ति को वास्तविक कार्यो के पूर्णतया योग्य बनाना । अतः जिस प्रकार के कार्य में, पेशे में– व्यक्ति जाना चाहता है, उसी कार्य को केन्द्र बना उसी के अनुरूप उसके शरीर, मन तथा आत्म का विकास होना चाहिये, जिससे उसमें आध्यात्मिक शक्ति भी बढ़े तथा कार्य करने की क्षमता भी प्राप्त हो।"

गांधी के अनुसार इस प्रकार की शिक्षा का एक अन्य लाभ और है– यह एक शान्त सामाजिक क्रान्ति का आधार बन जाता है। यह ग्रामीय जीवन तथा शहरी जीवन को निकट ले आती है, अतः वर्ग भेद के एक मूल आधार की तीव्रता कम कर देता है। फलस्वरूप ग्रामों – की संस्कृति भी नष्ट हो जाने से बच जाती है, क्योंकि शहरी जीवन का आकर्षण कम हो जाता है। इस प्रकार शहर तथा गांवों के नागरिकों का अन्तर मिटने लगता है। इसका एक और लाभ यह भी है कि इस प्रकार से शिक्षित – व्यक्ति अपने शिल्प का पूर्णरूप से जानकार होता है, अतः उसके शोषण की सम्भावना भी कम हो जाती है। इस प्रकार गांधी का विश्वास है कि इस प्रकार की बुनियादी शिक्षा के बड़े ही उपयोगी परिणाम प्रकाश में आयेंगे।

गांधीजी के विचारों को ही पुष्ट करने हेतु डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन के विचारों की ओर ध्यान देंगे तो स्पष्ट होता है कि वे भारतीय परम्परा के अनुरूप सर्जनात्मक अन्तदृष्टि (Creative Intuitial) को विशिष्ट मानते है जबकि पाश्चात्य परम्परा में 'समीक्षात्मक विवेकशक्ति' (Critical Intelligence) को सर्वोपरि माना जा रहा है। राधाकृष्णन के अनुसार ज्ञान के तीन ढंग संभव है–

- इन्द्रिय **अनुभव** (Sense eÛperience)
- बौद्धिक अवगति (Intellectual Cognition)
- अन्तदृष्टि (Intuitive Aprehension)

इन्द्रिय अनुभवों के द्वारा हम वस्तुओं के उन गुणों या लक्षणों को पकड़ते है जिन्हें पकड़ने की क्षमता उनमें है राधाकृष्णन की इन्द्रिय अनुभव विवरण प्रायः उसी प्रकार का है। जैसा कि इसके सम्बन्ध में सामान्य मनोविज्ञान में उपलब्ध है इसका कार्य भौतिक वस्तुओं के बाह्य लक्षणों को तथा मानव के शारीरिक दृष्टि लक्षणों को पकड़ना है इस प्रकार यह ऐसी सामग्री एकत्रित कर लेता है जिस पर हमारी बौद्धिकता विचार कर सकती है।

बौद्धिक विचार मन का व्यापार है यह विश्लेषण एवं संश्लेषण के द्वारा अपना कार्य करता है इन्द्रियों से प्राप्त सामग्री का यह विश्लेषण करता है तथा उन विश्लेषित तत्वों में नये नये सम्बन्ध देखता है उनमें नये ढंग का संश्लेषण करता है फलतः इसके द्वारा उपलब्ध ज्ञान परोक्ष एवं प्रतीकात्मक हो जाता है यह परोक्ष इस कारण है कि इसका सम्पर्क विषय वस्तुओं से साक्षात सम्पर्क नहीं है, बिल्क इन्द्रियों से प्राप्त सामग्रियों के माध्यम से है इन्द्रियों से जो इसे प्राप्त होता है वह भी वस्तु नहीं है बल्कि वस्तु का प्रतिरूपण है उसके कुछ बाह्य रूपों की पकड़ है इन्ही का भाव चिन्ह या सकेंत के रूप में उपयोग कर बौद्धिकता अपना कार्य करता है इसी कारण बौद्धिक अवगति को प्रतीकात्मक कहा जाता है।

डॉ. राधाकृष्णन का विचार है कि इन्द्रिय अनुभव तथा बौद्धिक अवगति के माध्यम से सत् का ज्ञान नहीं प्राप्त हो सकता है वे व्यवहारिक जीवन में बड़े उपयोगी है, उन्ही से हमारा साधाराण जीवन संचालित होता है, किन्तु वे यथार्थज्ञान सत् के ज्ञान के माध्यम नहीं हो सकते। ये दोनो माध्यम अनिवार्यतः सीमित है, और ऐसा भी नहीं है कि उनके द्वारा प्राप्त ज्ञान सदा निश्चितता ही हो। सत् का ज्ञान ऐसे माध्यम से सम्भव नहीं जिसमें स्वरूपतः अयथेष्टता एवं सीमितता हो।

अतः संक्षिप्ततः अन्तदृष्टि में एक और सहज प्रवृति' (Instinct) के समान साक्षातता, सहजता एवं अपने विषय को सम्पूर्णता में पकड़ने की क्षमता निहित है, तो दूसरी ओर, इसमें बुद्धि के समान चेतना भी निहित है। इस प्रकार मनुष्य होने के नाते हमारा केवल मात्र कर्तव्य इस अन्तदृष्टि को अनुभूत करना तथा उसी के अनुरूप अपने समस्त कार्यों को परिणाम तक पहुंचाना होना चाहिए।

अन्तदृष्टि का स्वरूप

संक्षेप में कहा जा सकता है कि अन्तदृष्टि में एक और 'सहज प्रवृत्ति' के समान साक्षातता, सहजता एवं अपने विषय को सम्पूर्णता में पकड़ने की क्षमता निहित है, तो दूसरी ओर, इसमें बुद्धि के समान 'चेतना' भी निहित है।

यह 'साक्षात' एवं 'तात्कालिक' ज्ञान देता है, क्योंकि इसका सम्पर्क विषय से साक्षात रूप में होता है, चिन्हों तथा प्रतीकों के द्वारा नहीं । यह किसी माध्यम के द्वारा कार्य नहीं करती। अन्तदृष्टि का एक प्रमुख लक्षम यह है कि इससे प्राप्त ज्ञान 'स्वतः सिद्ध' होता है। इसे स्वतः सिद्ध इस कारण कहा गया है क्योंकि इसे अपने प्रमाण्य के लिये किसी अन्य साधन के सहारे की आवश्यकता नहीं होती। यह अपना प्रमाण्य स्वतः प्रस्तुत करता है, अन्तदृष्टि की विशिष्टता है कि इससे प्राप्त अवगति में यह भी निहित है कि यह यथार्थ है– सत्य है।

इसे तात्कालिक ज्ञान कहा गया है क्योंकि यह ज्ञान हर भेद, हर द्वैत को मिटा देता है। इस प्रकार का जानना विषय को आत्मसात करता है। ऐसा नहीं है कि यह मात्र सैद्धान्तिक एवं अव्यवहारिक है, वस्तुतः इस प्रकार की अवगति तो मनुष्य के लिये सर्वथा स्वाभाविक है। हर व्यक्ति में अन्तदृष्टि की क्षमता रहती ही है, इसे साधारण उदाहरणों के द्वारा सिद्ध कर दिखाया जा सकता है।

राधाकृष्णन कहते है कि इस प्रकार अन्तदृष्टि उन सभी कार्यो को कर लेती है, जो इन्द्रिय. सहज प्रवृति एवं बुद्धि से सम्पादित होते है, तथा उनके अतिरिक्त कुछ ऐसे कार्य भी सम्पादित करती है जो उन तीनों से सम्भव नहीं है। इसकी यही विशिष्टता एवं व्यापकता इसे सब ज्ञान के लिये समर्थ बना देती है।

राधाकृष्णन का दावा है कि जीवन – सम्बन्धी तथा तर्क – सम्बन्धी सिद्धान्त, और उसके साथ–साथ सभी सामान्य वैज्ञानिक मान्यतायें भी किसी न किसी रूप में इसी प्रकार की सूझ पर आश्रित रहते है। उदाहरणतः 'एकरूपता' या 'संगठन' के ही विषय 'सूझ' जाती है। उसी प्रकार हम जीवन के उन मूल आस्था के बिन्दुओं के विषय में सोचें, तथा अपनी प्रतिबद्धताओं के विषय में सोचें– इनकी स्थापना विचार के द्वारा नहीं होती, ये एकाएक 'सूझ' जाती है– पकड़ी जाती है। चरम सत्य दृष्टाओं को दिखाई देते हैं तर्कों से स्थापित नहीं किये जाते।

अंत में मैं यह बताना चाहती हूं कि वास्तविकता में गुरू की क्या उपादेयता है? –

One gets the external Guru to awaken the internal Guru and to destroy the ego.

यहां मैं एक बात और स्पष्ट करना चाहती हूं कि –

The true Guru is one who sows such a seed in the disciple, the fruit of which is God himself.

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. शिक्षा क्या है? जे. कृष्णमूर्ति (राजपाल एण्ड सन्स)
2. शिक्षा शास्त्र – एम.डी. जफर (किताब महल इलाहाबाद)
3. शिक्षा शास्त्र – डॉ. वैद्यनाथ प्रसाद शर्मा (बिहारी हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पटना)
4. शिक्षा मनोविज्ञान एवं शिक्षा विद्या, संजय गुप्ता

❖◆❖